Shri Chandika Mala Mantra

।।श्रीचण्डिका माला मंत्र।।



SHRI RAJ VERMA JI

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

चण्डिका माला मंत्र घोर संकट में साधक को अभय प्रदान करती है। विधिपूर्वक साधना से षट्कर्मों में सिद्धि प्राप्त होती है। विशेष शत्रु दल के समूह से घिर जाने पर भगवती साधक की रक्षा करती हैं। किसी व्यक्ति या समूह को ध्यान में रखते हुए पाठ करने से आकर्षण एवं वशीकरण कार्य में सिद्धि मिलती है। शत्रुओं का मान मर्दन होता है, क्रूरग्रहों की पीड़ा से शान्ति मिलती है एवं परकृत्या का संहार होता है। भगवती का पंचोपचार पूजन करने के पश्चात् संकल्प लेकर पर्याप्त संख्या में जप करें। श्रद्धामय तथा पवित्रमन से पाठ करने से साधक का सदैव कल्याण होता है।

विनियोग- ॐ अस्य श्रीचण्डिका-मालामंत्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीचण्डिका देवता। ॐ ह्रः बीजम्। ॐ सौं शक्तिः। ॐ ह्रौं कीलकम्। श्रीचण्डिकाप्रसादसिद्ध्यर्थं सकलजनवश्यार्थं श्रीचण्डिका-मालामंत्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास- मार्कण्डेय ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्रीचण्डिकादेवतायै नमः हृदि। ॐ ह्रः बीजाय नमः गुह्ये। ॐ सौं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ह्रौं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास- ॐ ह्रां फ्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं फ्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रूं फ्रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रैं फ्रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं फ्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रः फ्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास- ॐ ह्रां फ्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं फ्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रूं फ्रूं शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं फ्रैं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं फ्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रः फ्रः अस्त्राय फट्।

।।श्रीध्यानम्।।

ॐ कल्याणीं कमलासनस्थशुभदां गौरीं घनश्यामलामाविर्भावित भूषणामभय-दामार्द्रैकरक्षैः शुभैः। श्रीं ह्रीं क्लीं वरमंत्रराजससहितामानन्द-पूर्णात्मिकां श्रीशैले भ्रमराम्बिकां शिवयुतां चिन्मात्रमूर्तिं भजे।

।।मालामंत्र।।

“ॐ ह्रः ॐ सौं ॐ वैं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीर्जयजय चण्डिका चामुण्डे चण्डिके त्रिदशमुकुटकोटिसंघट्टितचरणारविन्दे गायत्रि सावित्रि सरस्वती अहिकृताभरणे भैरवरूपधारिणी प्रकटित दंष्ट्रोग्रवदने घोराननननयने ज्वलज्जवालासहस्रपरिवृते महाट्टहासधवलीकृत दिगन्तरे सर्वयुगपरिपूर्णे कपालहस्ते गजाजिनोत्तरीयभूत वेतालपरिवृते अकम्पितधाराधरे मधुकैटभमहिषासुर धूम्रलोचन चण्डमुण्ड रक्तबीज शुम्भनिशुम्भ दैत्यनिकृन्ते महामाये शिवे नित्ये ॐ ऐं ह्रीं ऐन्द्रि आग्नेयी याम्ये नैऋति वरुणि वायवि कौबेरि ऐशानि ब्रह्मविष्णुशिवस्थिते त्रिभुवनधराधरे वामे ज्येष्ठे रौद्रि अम्बिके ब्राह्मी माहेश्वरी कौमारी वैष्णवी वाराहींद्राणी ईशानी महालक्ष्मीः इति स्थिते महोग्रविष महाविषोरगफणा मणिमुकुटरत्न महाज्वाला मलमणि महाहिरारबाहुकहोत्तमांग नवरत्ननिधि कोटितत्त्व बाहुजिनावाणी शब्दस्पर्श रूपरसगन्धात्मिके क्षितिसाहस मध्यस्थिते महोज्ज्वल महाविषोपविष गन्धर्वविद्याधराधिपते ॐ ऐंकार ॐ ह्रीं ॐ क्लींकार हस्ते आं ह्रीं क्रौं अनग्नेनग्नेपाते प्रवेशय-प्रवेशय ॐ द्रां द्रीं शोषय-शोषय द्रां द्रीं ॐ मोहय-मोहय ॐ क्लां क्लीं दीपय-दीपय ॐ ब्लूं-ब्लूं सन्तापय-सन्तापय ॐ सौं सौं उन्मादय-उन्मादय ॐ म्लैंम्लैं मोहय-मोहय ॐ खां खां शोधय-शोधय ॐ द्यां द्यां उन्मादय-उन्मादय ॐ ह्रीं ह्रीं आवेशय-आवेशय ॐ स्त्रीं स्त्रीं

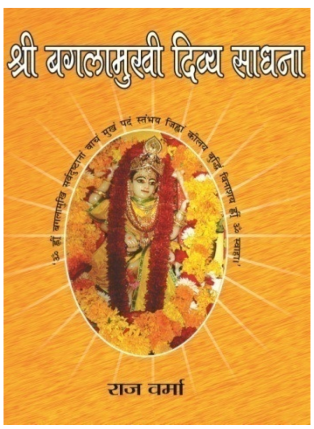
उच्छादय-उच्छादय ॐ स्त्रीं स्त्रीं आकर्षय-आकर्षय ॐ हुं हुं आस्फोटक-आस्फोटक ॐ त्रूं त्रूं त्रोटय-त्रोटय ॐ छां छां छेदय-छेदय ॐ कूं कूं उच्चाटय-उच्चाटय ॐ हूं हूं हनहन ॐ जां जां मारय-मारय ॐ घ्रीं घ्रीं घर्षय-घर्षय ॐ स्वीं स्वीं विध्वंसय-विध्वंसय ॐ प्लूं प्लूं प्लावय-प्लावय ॐ भ्रां भ्रां भ्रामय-भ्रामय ॐ म्रां स्त्रां दर्शय-दर्शय ॐ दां दां दिशांबन्धय-दिशांबन्धय ॐ दीं दीं वर्तिनामेकाग्रचित्ताविशिकुरुतेङगये ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ॐ फ्रां फ्रीं फ्रूं फ्रैं फ्रौं फ्रः ॐ चामुण्डायैविच्चे स्वाहा। मम सकलमनोरथं देहि सर्वोपद्रवं निवारय अमुकं वशे कुरुकुरु भूतप्रेतपिशाच ब्रह्मपिशाच ब्रह्मराक्षसयक्षयमदूत शाकिनी डाकिनी सर्वश्वापदतस्करादिकं नाशय-नाशय मारय-मारय भंजय-भंजय ॐ भंजय-भंजय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं स्वाहा।"

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi



- Shri Baglamukhi Divya Sadhana



Shri Raj Verma ji
Contact- 09897507933, 07500292413